International Indexed, Refereed Research Journal, ISSN-2250-253X, (Print), E-ISSN-2320-544X, ISSUE-11, VOL-I, Nov,2013



# enyk xxl dh dgkfu;k e ehfM;k dk c<rk iHkko

* MkW- lrh"k lkyd

* fgUnh foHkkx] foØe fo'ofo|ky;] mTTku

पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव के कारण भारतीय संस्कृति का लोप होते जा रहा है। आज की युवक–युवतियों पर पाश्चात्य संस्कृति का अधिक प्रभाव है। पाश्चात्य संस्कृति का फैलाव होने का कारण मीडिया है। आज मीडिया का प्रभाव साहित्य पर कई रूपों में देखा जा सकता है। जिस तरह साहित्य ने मीडिया को प्रभावित किया है उसी तरह मीडिया ने भी साहित्य को प्रभावित किया है।

''पंडित ओमप्रकाश शर्मा भारद्वाज का पाश्चात्य संस्कृति के बारे में कहना है कि, भारतीय संस्कृति–साहित्य एवं परंपराओं को भी बलात पाश्चात्य संस्कृति का दास बनाया जा रहा है। आज योग को 'योगा', कर्म को 'कमा', धर्म को 'धर्मा' और राम को 'रामा' कहना इसी वर्ण संकरीय मानसिकता का प्रभाव है। आज उन्हीं भारतीयों को 'आर्ट ऑफ लीविंग' सिखाया जा रहा है, जो जगतगुरू और विद्या मार्तंडों की जन्मभूमि है, साथ ही इस पाष्चात्य संस्कृति के प्रभाव और परंपरा के माध्यम से धनार्जन भी किया जा रहा है।''[1]

वैसे देखा जाए तो संस्कृति ही मानव का सच्चा आभूषण है

## 1- ehfM;k dk c<rk iHkko

आज का युग मीडिया का युग है जिधर देखिये उधर मीडिया का ही प्रभाव है, आज के युग मे मीडिया शक्ति सम्पन्न है। मीडिया लोकतंत्र का चौथा स्तम्भ है। वह भारतीय संघ के क्षेत्र में रहकर भारतीय नागरिकों के लिए कार्य करता है। मीडिया जनमत को प्रकट करते है और अपने प्रभाव से उसका निर्माण करते है। सामान्य जनता आज भी मीडिया की ओर आकृष्ट हुई है। मीडिया में खासकर टी.वी. ने भूमंडल में स्थानों के अंर्तग्रथन को तेज गहन और अनिवार्य कर दिया है।

## 1- fdruh dSn

मृदुला गर्ग जी का यह प्रथम कहानी संग्रह है। इस कहानी संग्रहों की कहानियों में मीडिया के बढ़ते प्रभाव का चित्रण हमें देखने को मिलता है, फिल्मों का भी समाज पर गहरा प्रभाव पड़ता है। मृदुला गर्ग जी द्वारा लिखित इस कहानी संग्रह की कहानी ''क्षुधा–पूर्ति में कहानी का नायक कन्हाई खाना खाने के लिए एक प्रकार से पेटू रहता है, पेटू अर्थात चाहे वह जितना खा ले उसका पेट नही भरता था। 'तमाशा' भी मीडिया का ही एक माध्यम है। कन्हाई की माँ भात पकाकर बाहर चली गयी, संयोग कुछ ऐसा हुआ कि कुछ देर की कानाफुसी के बाद, कन्हाई के दोनों बहनें खिड़की से झांककर तमाशा देखने चली गयी और वह बोली में अकेला रह गया, एक तरफ वह दूसरी तरफ भात से भरी हांडी।''[2] तमाषा भी एक तरह से ऐसा माध्यम है जो व्यक्तियों को अपनी तरफ आकृष्ट कर लेता है, ''कन्हाई के घर छोड़कर दूसरे के यहाँ नौकर काम करता है, उसके मालिक के पास गाड़ी है, टी.वी. है, फ्रिज है यहाँ तक कि एयर कंडीशनर भी है, पर उसका पेट ये नहीं भर सकते, पर मनोरंजन तो कर सकते है।''[3] मृदुला गर्ग जी की 'हरी बिन्दी' कहानी का नायक राजन जो मीडिया से प्रभावित है' ''राजन कहता है पास किसी सिनेमाघर में पिक्चर देख ली जाये किस्मत से अंग्रेजी की पुरानी मज़ाकिया पिक्चर लगी मिल गयी डेनी विलन है उसमें''[4] इसी कारण आज के युवा अपने मार्ग से भटक रहे है इस चकाचौंघ कर देने वाली शैली के लिए ''मृदुला गर्ग जी की 'विचल' कहानी में भी इस कहानी का नायक को रविवार छुट्टी का मिलता है, तो शाम सिनेमाघर या क्लब में ही बीतती है।''[5] मीडिया ने समाज में बहुत बदलाव लाया है। मीडिया का प्रभाव पुरी दुनिया में फैला हुआ है एक उदाहरण मृदुला गर्ग जी ने 'लौटना और लौटना' कहानी में कहा है कि, 'अमेरीका में भी तक पर प्रोग्राम मिल जाते है अब तो यहाँ भी टेलीविजन आ गया।''[6]

## 2- VqdMk VqdMk vkneh

मृदुला गर्ग जी की इस कहानी संग्रहों में तो अधिकतर कहानियाँ उत्तर भारत और दक्षिण भारत के विषयों पर आधारित है। मृदुला जी ने 'टुकड़ा टुकड़ा आदमी' इस कहानी संग्रह की कहानी 'उसकी कराह' में मीडिया के बढ़ते प्रभाव का इस कहानी की नायिका के माध्यम से अच्छा चित्रण किया है। ''सुधा को डॉक्टर ने कहा है सुधा दो, चार, छह महीनों की मेहमान है, तो सुधा का पति सुमित सुधा को उसका मन बहलाने के लिए, सुधा को पिक्चर दिखाने के लिए ले जाता, सुमीत सुधा को कहता है, गोलचा सिनेमाघर में बढ़िया पिक्चर लगी है, सुधा पूछती है क्या नाम है– 'आनंद' तो फिर टिकट ले लो, सुमीत पिक्चर के बारे में गहराई से सोच रहा था क्योंकि

सुधा को ब्रेन ट्यूमर की बीमारी थी और ज्यादा दिन बचने वाली नही थी, सुमीत सुधा को कहता है देखा वह जानता था, वह मरने वाला है फिर भी कितना प्रसन्न रहता था इसे कहते है हिम्मत वह यानी फिल्म का नायक आनंद कैंसर से पीड़ित मृत्यु की अनिवार्यता से वाकिफ होने के बावजूद आनंद के साथ जीवन के बचे दिन जी रहा था और दूसरों को जीना सीखा रहा था।''[7] कहने का तात्पर्य यह है मीडिया के अंतर्गत भी हमें बहुत अच्छा सीखने को मिलता है। ''टुकड़ा टुकड़ा आदमी' इस कहानी में भी पत्रकार प्रेस मीटिंग का बुलाना मीडिया के अंतर्गत आता है।''[8] मृदुला गर्ग जी ने भी शहरों में रहने के कारण, उन्होंने अपनी कहानियों में मीडिया के अंतर्गत फिल्मों, सिनेमा, अखबारों का उल्लेख किया है। कहानी 'अवकाश' में थका महेश अखबार ले कर बैठा था अखबार से नही उठायी।''[9] व्यक्ति भी अखबारों में बहुत रूचि लेता है मृदुला गर्ग जी की बहुचर्चित कहानी 'दो एक फूल' कहानी में कहानी की नायिका शांतम्मा कहती है ''पति को बीस रूपये दिये तो ताजी देख फिल्म 'जवानी दीवानी' देखता है उसका गाना गुन–गुनाता बाजार की तरफ चल दिया जाता है।''[10]

### 3- Xysf'k;j ls

मृदुला गर्ग जी का नौंवे दशक में लिखा गया 'ग्लेशियर से कहानी संग्रह में कुल सोलह सहानियाँ संकलित है। मृदुला गर्ग जी ने इस कहानी संग्रह की कहानी 'झुलती कुर्सी' में भी संचार माध्यम के आधार पर टेलीफोन का उल्लेख किया है टेलीफोन भी मीडिया का माध्यम है– ''टेलीफोन की घंटी बजती है, क्या पता किसका फोन है। मैं कुर्सी छोड फोन पर भागती हूँ, फोन का चोंगा मेरे हाथ में है हैलो मैंने जोर से कहा, उधर से भी हैलो की आवाज आती है।''[11] आज के लेखकों ने आजीविका के लिए अखबारों से लेकर रेडियो, टेलीविजन, टेलीफोन और सिनेमा तक के लिए बहुत कुछ लिखा है। इसका कारण यह है कि मीडिया का प्रभाव बढ़ता जा रहा है। पत्रिका पत्रकारिता मीडिया के अंतर्गत ही आती है ''टोपी' कहानी में चड्डा एक पत्रिका का संपादन कर रहा था।''[12]

आज इस मीडिया ने बहुत कुछ बदल दिया है मनोरंजन ने सस्तेपन और हल्केपन का माहौल सृजित कर दिया है। मृदुला जी ने एक कहानी में फिल्म का उल्लेख किया है ''नायिका कहती है 'हर बंबईया फिल्म में इसका बार–बार इस्तेमाल किया जाता है। बाजारों में फिल्म थियेटर भी मिलते है नायिका कहती है मैंने बंबईया फिल्मों की हीरोइननुमा, शुद्ध भारतीय नारी की तरह मैने भारी जरीदार सिल्क की साड़ी पहनी है, फिल्मी त्रासदी।''[13] आज इस मीडिया ने, संचार माध्यमों ने कहानी को तो व्यावसायिक बना दिया है, मृदुला जी की कहानी 'खरीदार' में लाउडस्पीकर पर जब फिल्मी गीत नहीं बज रहे थे।''[14]

### 4- nqfu;k dk dk;nk

दुनिया का कायदा यह मृदुला गर्ग जी के अन्य संग्रहों में संग्रहीत चुनिंदा कहानियों का संकलन है, ज्यादातर कहानियाँ 'कितनी कैंदे' कहानी संग्रह में सी ली गई है 'सुबह भी अंधेरे से खाली नहीं' यह कहानी किसी भी संग्रह में नहीं है।

### 5- MSQksfMy ty jgs gS

इस कहानी संग्रह में तीन लंबी कहानियाँ संग्रहीत है–'डैफोडिल जल रहे' है, 'मेरा' और 'स्थगित कल' मृदुला गर्ग जी की कहानी 'मेरा' भीमसेन द्वारा निर्देशित फिल्म 'तुम लौट आओ' इसी संग्रह की 'मेरा' कहानी पर बनी है। कहने का तात्पर्य यह है कि खुद मृदुला गर्ग पर मीडिया का प्रभाव है। मृदुला गर्ग जी ने इसी कहानी संग्रह की लंबी कहानी 'डैफोडिल जल रहे है' में मीडिया के बढ़ते प्रभाव का चित्रण किया है–''एक दिन पिक्चर देख कर बाहर निकले तो सुधाकर बोला 'वीनु तुम फिल्मी स्टाइल में मेरे साथ शादी करोगी।' वहीं दूसरी ओर उनकी बहन का एक फिल्म प्रोड्यूसर के मंझले लड़के से प्रेम हो जाता है फिल्म प्रोड्यूसर से भी शादी करने की इजाजत मिलती है।''[15] मीडिया और साहित्य के बन रहे नये संबंधों पर तो विचार करते हुए अचानक याद आये कि हमें आसपास के साहित्यिक अनुभवों का स्मरण करना भी आवश्यक है।

मृदुला गर्ग जी की 'मेरा' कहानी में नायिका गीता और नायक महेन्द्र बाहर घूमने चले जाते है तभी गीता महेन्द्र कि एक बात मान गयी साथ में कॉफी पीना, इंडिया गेट घूमना एक ही सिनेमाघर में पिक्चर देखना, घंटों बातें करना।''[16] यह सब मीडिया का प्रभाव है, हर एक परिवार को थोड़ी सी फुर्सत मीलती तो वह मीडिया का सहारा लेते है। मृदुला गर्ग जी द्वारा लिखित 'स्थगित कल' कहानी केवल प्रवीण और विपिन दो पात्रों पर ही आगे बढ़ती है प्रवीण को कैंसर रहता है और वह अस्पताल में भर्ती रहता है उसे मिलने के लिए विपिन चला जाता है तो विपिन यह दृश्य देखता है, ''रविवार की शाम रोगी को खाली मिलती है, उस दिन तमाम बेचार रीज टेलीविजन पर पिक्चर देखते है। एक जगह पर प्रवीण विपिन को कहता है क्यों इस तरह के झूठे फिल्मी जुमले बोल रहा है।''[17]

### 6- mQZ lSe

उर्फ सैम 'कहानी संग्रह में कुल बारह कहानियाँ संग्रहित है। इसमें समाज और परिवेश की विसंगतियों पर जोर दिया गया है। अब मीडिया तो साहित्य को बनाता है मीडिया की भाषा बदल गयी है, वह अंग्रेजी के कई शब्दों को हिन्दी के वाक्यों में डालकर चलती है। मृदुला गर्ग जी ने अपनी कहानी 'उर्फ सैम' में मीडिया का वर्णन किया है, ''दिल नही

तो जेब खोलकर उनके खाने–पीने और मनोरंजन पर खर्च किया है घर के दरवाजे पर खड़े होकर हिन्दी फिल्मों में वर्जित चुंबन लिये है और दो चार बार घर के अंदर प्रवेश भी पा चुका है, नायक कहता है मेरी पत्नी बोर नही होती अपने चार बेडरूम के स्वतंत्र दो मंजिले मकान में लगे रंगीन टी.वी. की चकमक दुनिया कोक लेकर प्रसन्न स्टडी में कम्प्यूटर। उनके पिता को उपहार में नया रंगीन टी.वी., वी.सी.आर दे दिया है।[18] मीडिया में जैसे रेडियो टी.वी. कम्प्यूटर, मोबाईल फोन इत्यादि आज प्रत्येक व्यक्ति की जीवन का अभिन्न अंग बन चुके है। 'वितृष्णा' कहानी में दिनेश शालिनी से पूछता है और ''कोई नयी फिल्म देखी''[19] मीडिया का केवल जनता तक सही तथ्य पहुँचना फिर चाहे वह किसी कीमत पर हो मृदुला जी ने रेडियो मीडिया का ही माध्यम है।

## संदर्भ ग्रंथ


1. पं. भारद्वाज ओमप्रकाष शर्मा – नईदुनिया पाष्चात्य प्रभाव दि. 26 जून 2007, पृ.क्र. 03
2. गर्ग मृदुला – क्षुधा पूर्ति (कितनी कैदें), प्रथम संस्करण 1975, इन्द्रप्रस्थ प्रकाषन, नई दिल्ली, पृ.क्र. 03
3. वही – पृ.क्र. 06
4. गर्ग मृदुला – हरी बिन्दी (कितनी कैदें), पृ.क्र. 10
5. गर्ग मृदुला – विचल (कितनी कैदें), पृ.क्र. 15
6. गर्ग मृदुला – लौटना और लौटना (कितनी कैदें), पृ.क्र. 26
7. गर्ग मृदुला – उसकी कराह (टुकड़ा–टुकड़ा आदमी), प्रथम संस्करण 1983, नेषनल पब्लिषिंग हाऊस, नई दिल्ली, पृ.क्र. 158
8. गर्ग मृदुला – उसकी कराह (टुकड़ा–टुकड़ा आदमी), पृ.क्र. 09
9. गर्ग मृदुला – अवकाष (टुकड़ा–टुकड़ा आदमी), पृ.क्र. 108
10. गर्ग मृदुला – दो एक फूल (टुकड़ा–टुकड़ा आदमी), पृ.क्र. 124
11. गर्ग मृदुला – झुलती कुर्सी (ग्लेषियर से) प्रथम संस्करण 1983, प्रभात प्रकाषन, नई दिल्ली, पृ.क्र. 307
12. गर्ग मृदुला – टोपी (ग्लेषियर से), पृ.क्र. 322
13. गर्ग मृदुला – एक (ग्लेषियर से), पृ.क्र. 331
14. गर्ग मृदुला – खरीदार (ग्लेषियर से), पृ.क्र. 344
15. गर्ग मृदुला – डैफोडिल जल रहे हैं (डैफोडिल जल रहे हैं) प्रथम संस्करण 1986, अक्षर प्रकाषन, नई दिल्ली, पृ.क्र. 191
16. गर्ग मृदुला – मेरा (डैफोडिल जल रहे हैं), पृ.क्र. 218
17. गर्ग मृदुला – स्थगित कल (डैफोडिल जल रहे हैं), पृ.क्र. 279
18. गर्ग मृदुला – उर्फ सैम (उर्फ सैम) प्रथम संस्करण 1986, राजकमल प्रकाषन, नई दिल्ली, पृ.क्र. 395
19. गर्ग मृदुला – वितृष्णा (उर्फ सैम), पृ.क्र. 401